अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 20 जुलाई, 2014)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	कुल योग
प्राप्तांक										
पूर्णांक	10	10	10	10	24	3	3	18	12	100
पुनः जाँच										

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) उत्तराध्ययन सूत्र के 29वें अध्ययन का नाम है -

(क) मोक्षमार्ग (ख) तपो मार्ग

(ग) सम्यक्त्व पराक्रम (घ) कर्म प्रकृति ( )

(b) काल प्रतिलेखना से जीव कर्म का क्षय करता है -

(क) ज्ञानावरणीय (ख) दर्शनावरणीय

(ग) वेदनीय (घ) आयु ( )

(c) क्रोध विजय से जीव को गुण की प्राप्ति होती है -

(क) क्षमाभाव (ख) संतोष

(ग) सरलता (घ) विनय ( )

(d) वचन गुप्ति से जीव किस गुण को प्राप्त करता है -

(क) एकाग्रता (ख) निर्विकारता

(ग) संवर (घ) योग विशुद्धि ( )

(e) चतुर्विंशतिस्तव से किस गुण की प्राप्ति होती है -

(क) दर्शन विशुद्धि (ख) चारित्र विशुद्धि

(ग) तप विशुद्धि (घ) आचार शुद्धि ( )

(f) साम्परायिक कर्माश्रव के भेद होते हैं -

(क) 39 (ख) 42

(ग) 25 (घ) 12 ( )

(g) 'किसी के द्वारा आचरित पाप को प्रकट कर देना ' क्रिया है -

(क) विदारण (ख) निसर्ग

(ग) आनयन (घ) अनाभोग ( )

(h) चारों आयु का बन्ध हेतु है -

(क) शीलरहितता (ख) व्रत रहितता

(ग) क व ख दोनों (घ) कोई नहीं ( )

(i) नीच गोत्र कर्म का बन्ध गुणस्थान तक होता है -

(क) प्रथम (ख) द्वितीय

(ग) चौथे (घ) पाँचवें ( )

(j) चौथे गुणस्थान में प्रकृतियों का उदय होता है -

(क) 77 (ख) 104

(ग) 142 (घ) 138 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) संवेग से जीव अनुत्तर धर्मश्रद्धा को प्राप्त करता है। ( )

(b) वंदना से जीव ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है। ( )

(c) उपधि-प्रत्याख्यान से जीव स्वाध्याय-ध्यान में निर्विघ्नता को प्राप्त करता है। ( )

(d) माया-विजय से जीव मार्दव गुण को प्राप्त करता है। ( )

(e) योग-प्रत्याख्यान से जीव अयोगी भाव को प्राप्त करता है। ( )

(f) आत्म-प्रशंसा, नीचगोत्र बन्ध का कारण है। ( )

(g) प्राणी मात्र पर करूणा बुद्धि से दया करना, भूत अनुकम्पा है। ( )

(h) योग ही आश्रव है। ( )

(i) तीर्थंकर नामकर्म का बंध संयम सापेक्ष है। ( )

(j) अप्रमत्त विरत गुणस्थान में 79 प्रकृतियों की उदीरणा होती हैं। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मुझसे जीव शैलेषी भाव को प्राप्त कर लेता है। .....

(b) मुझ पर विजय पाने से जीव क्षमाभाव को प्राप्त करता है। .....

(c) मुझसे जीव एकाग्रता प्राप्त करता है। .....

(d) मुझसे जीव तीर्थंकर नाम गोत्र का बन्ध करता है। .....

(e) मेरी आराधना से जीव अज्ञान का क्षय करता है। .....

(f) मैं तिर्यंचायु बन्ध का आश्रव हूँ। .....

(g) मैं चारों आयुओं का बन्ध हेतु हूँ। .....

(h) मैं एक ऐसी प्रकृति रूप भावना हूँ जिसका विषय प्राणिमात्र है। .....

(i) मैं एक ऐसी कर्म प्रकृति हूँ जिसका बन्ध 13वें गुणस्थान तक होता है। .....

(j) मैं एक ऐसा कर्म हूँ, जिसकी उत्तर प्रकृतियाँ चार होती हैं। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम से नहीं दिये हुए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a)	मुत्तीए	-	वोदाणं	.....
(b)	संवेगेणं	-	जीवाजीवाः	.....
(c)	वंदणएणं	-	ऋषि	.....
(d)	काल पडिलेहणयाए	-	सहेली	.....
(e)	तवेणं	-	डरना	.....
(f)	अधिकरणं	-	महल	.....
(g)	इसि	-	अकिंचणं	.....
(h)	सही	-	अणुत्तरं धम्म सद्धं जणयइ	.....
(i)	पसाअ	-	नीयागोयं कम्मं खवइ	.....
(j)	बीह	-	नाणावरणिज्जं कम्मं खवइ	.....

प्र.5 निम्न सूत्रों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :- **12x2 = (24)**

(a) **स आश्रवः अथवा असदभिधानमनृतम्।**

.....

.....

(b) **निःशल्योव्रती अथवा माया तैर्यग्योनस्य।**

.....

.....

(c) **कोह विजएणं खंतिं जणयइ। कोह वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ।**

.....

.....

(d) **नाणसम्पन्नयाए णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसम्पन्ने णं जीवे चाउरंते संसार कंतारे न विणस्सइ।**

.....

.....

(e) **करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।**

.....

.....

(f) सरीर पच्चक्खाणेणं सिद्धाइसय गुणकित्तणं निव्वत्तेइ।

.....

.....

(g) पहले अथवा तीसरे गुणस्थान में बंध एवं उदय योग्य प्रकृत्तियों की संख्या लिखिए।

.....

.....

(h) दसवें गुणस्थान के अन्त समय में कौन-कौनसी प्रकृत्तियों का बन्ध विच्छेद होता है ?

.....

.....

(i) 14वें गुणस्थान में कौन-कौनसी प्रकृतियों का उदय रहता है ?

.....

.....

(j) अनंतानुबंधी कषाय व अप्रत्याख्यानी कषाय का बंध किस गुणस्थान तक होता है ?

अथवा

नपुंसक वेद एवं पुरुषवेद का बंध किस गुणस्थान तक होता है ?

.....

.....

(k) स्थानकवासी परम्परा की दो मौलिक मान्यताएँ लिखिए।

.....

.....

(l) मुखवस्त्रिका की लम्बाई व चौड़ाई कितनी होती है ?

.....

.....

प्र.6 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :- **3x1 = (3)**

(a) मुणी समाहिं रमीअ।

.....

.....

(b) **सा पाठसालं गच्छिहिइ।**

.....

.....

(c) **अहं बालाण फलाणि दामि।**

.....

.....

(d) **मम पुत्तो पावत्तो दुगुंच्छइ।**

.....

.....

(e) **मोक्खाय हरिं भजइ।**

.....

.....

प्र.7 निम्नलिखित में से किन्हीं तीन का प्राकृत में अनुवाद कीजिए :- **3x1 = (3)**

(a) **अरिहंतों को नमस्कार हो।**

.....

.....

(b) **मेरा पुत्र पाप से घृणा करता है।**

.....

.....

(c) **मैं शिष्य को शास्त्र देता हूँ।**

.....

.....

(d) **मधु आँख से काणा है।**

.....

.....

(e) **राम दूध पीएगा।**

.....

.....

प्र.8 निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए :- **6x3 = (18)**

(a) **ब्रह्मचर्यव्रत अथवा सत्यव्रत की भावनाएँ लिखिए।**

.....

.....

(b) **अकाम निर्जरा एवं बालतप में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

अथवा

योग वक्रता व विसंवादन में क्या अन्तर है ?

.....

.....

(c) **रेखाचित्र के माध्यम से जैन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों का उल्लेख कीजिए।**

अथवा

स्त्रीमुक्ति के विषय में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर मान्यताओं में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

(d) **श्वेताम्बर परम्परा में मुनियों के लिए वस्त्रपात्र आदि रखने के विषय में क्या युक्ति दी गई ?**

.....

.....

.....

(e) **उदीरणा किसे कहते हैं?उदीरणा के लिए कौनसी तीन बातें अनिवार्य हैं ?**

.....

.....

.....

(f) **14 गुणस्थानों में बन्ध योग्य अथवा उदय योग्य प्रकृत्तियों की संख्या लिखिए।**

.....

.....

.....

प्र.9 निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :- **4x3 = (12)**

(a) **गरिहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ, पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थ जोग पडिवन्ने य णं अणगारे अणंतघाइ पज्जवे खवेइ।**

.....

.....

.....

.....

(b) **खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायण भावमुवगए य सव्व पाणभूय-जीव सत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ।**

.....

.....

.....

.....

(c) **दंसण-संपन्नयाए णं भव-मिच्छत्त- छेयणं करेइ। परं न विज्झायइ। परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ।**

.....

.....

.....

.....

(d) **वीयरागयाएं णं नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिंदइ मणुन्नामणुन्नेसु सद्द-फरिस-रस-रूव गंधेसु सचित्ताचित्त मीसएसु चेव विरज्जइ।**

अथवा

सहाय-पच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि य णं जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्प-तुमंतुमे, संजम-बहुले संवर बहुले समाहि ए यावि भवइ।

.....

.....

.....

.....